तेलुगु साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श

प्रो .अन्नपूर्णा.सी.
हैदराबाद केन्द्रीय विश्व विद्यालय,
हैदराबाद

भारतीय साहित्य के मूलभूत अवधारणाएँ तो समान हैं। भारतीय साहित्य को हम राष्ट्रीय साहित्य के रूप में लेते हैं और इसे विश्व साहित्य के रूप में भी देखा जा रहा है। उत्कृष्ट साहित्य को हम विश्व साहित्य के मापदंडों के अनुसार कसौटी पर कसकर देखते हैं। भारतीय भाषाओं में जो साहित्य रचा जा रहा है, वह समकालीन परिस्थितियों के अनुसार निर्मित है। आधुनिक हिंदी साहित्य में या अंग्रेजी साहित्य में या अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में समांतर रूप से हमें खासकर बीसवीं सदी से अब तक जो आधुनिक विमर्श दिखाई दे रहे हैं, वे सारे विमर्श हर भाषाओं में उपलब्ध हैं। यहाँ हम साहित्य को दो रूपों में देखते हैं - मौलिक साहित्य और अनूदित साहित्य। मौलिक रूप को सृजनात्मक साहित्य के द्वारा और अनूदित साहित्य के रूप में अर्थात अन्य भाषाओं में जो नई विधाएँ दिखाई देती है, उन को अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषाओं में भी प्रयोग करते हैं।

इस संदर्भ में यह अनुवाद की विशिष्टता या भूमिका जो भी कहें। उसके परिप्रेक्ष्य में तेलुगु साहित्य के कुछ प्रमुख काव्य का जो तेलुगु से हिंदी में अनुवाद हुआ है उसका परिचय देना आवश्यक लगता है। वर्तमान हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श और परिस्थितिकी विमर्श पर ज्यादा रचनाएँ दिखाई दे रही है।

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक से इन विमर्शों का बीजारोपण हुआ है। अनुवाद के माध्यम से साहित्य संसार में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। मुख्य रूप से आज के भूमंडलीकृत परिवेश के कारण सामाजिक दूरी मिट गई। औद्योगिक विकास हुआ। व्यक्ति भी अपने समाज और सोच को भी विस्तार की ओर ले जा रहा है। इन सभी के पीछे अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय बहु भाषिक स्थिति में हर व्यक्ति भले ही बहुभाषिक बनना चाहते हैं, तो भी यह सहज साध्य नहीं है। ऐसी स्थिति में अनुवादक ही एकैक मार्ग है। उसके द्वारा ही हम सभी भाषाओं के साहित्य को एक छत के नीचे ला सकते हैं। आज समाज में वही कार्य हो रहा है। साहित्यकार भावात्मक एकता की दृष्टि से सोचते हुए दूसरे साहित्य, समाज और संस्कृति का आकलन भी करते हुए साहित्य का निर्माण कर रहे हैं। इस वजह से आज हम हर भाषा के साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श, अल्पांख्यक विमर्श आदि को देख रहे है। हर भाषा और साहित्य की अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं, उसी के साथ वे इन विमर्शों को भी स्थान दे रही हैं। युगीन परिस्थितियों के अनुसार साहित्य सृजन हो रहा है। आधुनिक साहित्य में रचनाकार अपनी रचनाओं में पर्यावरण और प्रकृति का वर्णन कर रहे हैं|

उसी को तेलुगु में 'पर्यावरणा परिरक्षण या 'पर्यावरण चेतना कह रहे हैं| आधुनिक साहित्य में भी सारी विधाओं में पर्यावरण और प्रकृति का चित्रण और वर्णन मिलत है| तेलुगु में पर्यावरण विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श, जीवकारुण्य विमर्श आदि शब्दों का भी प्रयोग हो रहा है।

मानव और प्रकृति के बीच अंत: संबंध है। मानव जीवन सुचारू रूप से चलने के लिए और सुरक्षा के लिए तीन चीजों की आवश्यकता है। (भूमि, वायु और जल। कपड़ा, मकान और रोटि) तीनों के बिना मनाव जी नहीं सकता। इन तीनों के संतुलन के लिए वह प्रयास करता रहता है। मानव संतुलन बिगाड़ देता है। प्रकृति अपने आप प्राकृतिक विपदाओं के द्वारा संतुलन करती है। प्रकृति वर्णन से ही काव्य या किसी रचना का श्री गणेश करते हैं। भारतीय संस्कृति का मेरुदंड है आध्यात्मिक तत्व | मानव प्रकृति और आध्यात्मिक जीवन के संबंध को सुरक्षित रखने का प्रयास करता है।

आधुनिक युग यांत्रिक युग होने के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो गया और हो रहा है| फलत: परिणाम क्रम में परिवर्तन दिखाई दे रहा है| प्रकृति का संरक्षण करने की ओर लोगों को जागरूक करने का समय आ गया | समाज में चेतना और जागरूकता लाने का कार्य शुरू हो गया| वर्तमान समय में उस की दुषपरिणामों के बारें में बताकर साहित्यकार अपनी कलम के द्वारा चेतावनी दे रहे हैं| उस की सुरक्षा के लिए बीड़ा उठाया |तेलुगु साहित्य में प्रकृति आराधना और उस की आवश्यकता के बारें में साहित्यकार अपनी रचनाओं के द्वारा

उद्बोधन कर रहे हैं| अन्य भाषाओं के साहित्य की भांति तेलुगु साहित्य में भी अनेक प्रसिद्द साहित्यकार अपनी रचनाओं के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा केलिए संदेशा दे रहे हैं| रायप्रोलु ,देवुलपल्ली ,दुव्वूरी , विश्वनाथ सत्यनारायण जाषुवा ,करुणश्री ,वेंकटेश्वर पार्वतीश कवि युगल,नयनि ,वेदुल आदि रचनाकारों ने प्रक्रति के प्रति आराधना को दिखाया |परन्तु उन्नीसवी , बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के रचनाकार प्रक्रति और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए लोगों को जागरूक कर रहे हैं|क्यों कि प्रक्रति की सुरक्षा नहीं करेगे तो भविष्य में अन्धकार और हा हकार मचेगा |इन में प्रमुख रचनाकार हैं सी.ना.रे.,शेषेन्द्र शर्मा,दाशरथी , आचार्य एन.गोपी ,वड्डे पल्लि कृष्णा ,अद्देपल्लि प्रभु ,पी.शिवशंकर ,के. विल्सन कुमार ,यम.सत्यवति ,मैनं पाटी भास्कर आदि अनेक साहित्यकार अपनी रचनाओं द्वारा आक्रोश व्यक्त कर रहे हैं|

इस संदर्भ में तेलुगु साहित्य के प्रसिद्ध काव्य 'विश्वंभरा' और 'जलगीतम्' (जलगीत) के बारे में परिचय देना चाहती हूँ | वर्तमान साहित्य में स्त्रीवाद, दलितवाद और अल्पसंख्यक के साथ साथ पारिस्थितिक विमर्श भी दिखाई दे रहा है । पहले साहित्य में प्रकृति का संबंध दूसरे रूप में चित्रण करते थे । साहित्य और प्रकृति का अटूट संबंध है । उसी प्रकृति को आज पारिस्थितिक विमर्श के रूप में साहित्यकार और आलोचक उसकी चर्चा कर रहे हैं । भारत के सभी भाषाओं के साहित्य में समांतर रूप से पारिस्थितिक विमर्श हो रहा है । समकालीन साहित्य की दृष्टि से तेलुगु के 'विश्वम्भरा' और 'जलगीत' काव्य में पारिस्थितिक विमर्श मिलता है।

तेलुगु साहित्य के आधुनिक कवियों में डॉ सी नारायण रेड्डी का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लेते हैं । आधुनिक युग में देशी तथा विदेशी काव्य परंपराओं से अनुप्राणित होकर आधुनिक तेलुगु महाकाव्य आकर्षक रूप में अभिव्यक्त हुए हैं । इनके करीब 25 काव्य तेलुगु साहित्य में प्रसिद्ध हैं । उन्होंने गद्यकाव्यात्मक शैली में 'विश्वंभरा' काव्य की रचना की है।

'विश्वाम्भरा' काव्य को 1988 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है । इस काव्य का मुख्य प्रयोजन मानवता के विकास को एक बृहत्तर आयाम पर चित्रित करना है। इसमें मानव की आदिम दशा से आधुनिक दशा तक की विकास यात्रा का चित्रण है । सारे विश्व का धारण तथा भरण पोषण करने वाली है विश्वम्बरा । इस काव्य की रंगभूमि विशाल विश्वम्बरा है और काव्य का नायक मानव है । विश्व की प्रकृति ही इसकी पार्श्वभूमि है । इसमें प्रकृति तत्वों का संदर्शन करते हुए, संगीत, नृत्य, कवित्व जैसी ललित कलाओं में मानव आपार विद्वत्ता का और अनंत प्रतिमा का काव्यमय प्रतीकात्मक चित्रण मिलता है । इस काव्य का हिंदी अनुवाद प्रो. भीमसेन निर्मल जी ने किया है।

मूल :तेलुगु

ओक देहं मट्टिलोकि

ओक जीवं मट्टिपैकि

इदी क्रमं प्रकृतिक

इदे क्रमं

प्रकृतिन अर्द्धांगिगा

मलुचुकुन्न

प्रतिपुरुषुनिकि (पृ सं 17)

हिंदी अनुवाद:

एक तन मिट्टी में

एक प्राण धरती पर

यही क्रम प्रकृति का

यही क्रम

प्रकृति को अर्धांगिनी बनाये

प्रत्येक पुरुष का (पृ सं 28)

2. मूल तेलुगु

एमिटिदि ?

ईनदी गर्भं लो

एडारि पदुकुन्नदि

पोंगे अलल्लू मिंगेसि

मंडुटिसुकनु नेमारेस्तुन्नदि (पृ. सं.64)

अनुवादः

यह क्या है !

इस नदी गर्भ में मरु भूमि लेटि हुई है

उफनती लहरों को निगल कर

गरम रेत की जुगाली कर रही (पृ. सं.27)

ऐसे ही तेलुगु के प्रसिद्ध काव्य 'जलगीतम्' की चर्चा भी यहाँ करना चाहती हूँ । यह पूरी तरह जल की विशिष्टता और आवश्यकता को बताता है। इस काव्य के मूल लेखक प्रसिद्ध कवि आचार्य एन गोपी जी है। आचार्य एन गोपी तेलुगु विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में काम कर चुके हैं। आधुनिक वर्तमान तेलुगु कवियों में सुप्रसिद्ध कवि हैं। इस काव्य का हिंदी अनुवाद 'जलगीत' नाम से से प्रो माणिक्याम्बा 'मणि' ने किया। इस कृति को साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

इस काव्य में जल के साथ मानव का अंतः संबंध, उस की विशिष्टता आदि वर्णन किया गया है। 'जल' नहीं है, तो मानव जीवन सूना है। जल के साथ ही जीवंतता है। पंच भूतों में जल को प्रथम स्थान प्राप्त है। भगवान ने मानव जीवन को खुशहाल रूप में चलाने के लिए प्राण वस्तु के रूप में दिया है। जल और वायु मानव के लिए आवश्यक चीजें हैं। उनके बिना मानव जीवित नहीं रह सकता। इस सृष्टि में प्राणि के लिए अत्यंत आवश्यक वस्तु है - जल। उसी पर आचार्य गोपी ने पूरा काव्य लिखा। साहित्य में पारिस्थितिकी विमर्श के लिए एक ज्वलंत उदाहरण है। जैसे मूल में कृति प्रस्तुत है, वैसे ही उतने ही जोश के साथ अनुवाद में भी प्रस्तुत है। प्रकृति की शोभा बढ़ाती हैं - नदियाँ। इस भूमि के ¾ भाग जल से ही भरा हुआ है। साहित्य में प्रकृति का वर्णन सहज और काल्पनिक दृष्टि से भी होता है। ये वर्णन रचना को जीवंत बनाते हैं। उदाहरण के रूप में अनूदित पंक्तियों को देख सकते हैं।

दाना-पानी

सुदूर सपना है, कुछ लोगों के लिए!

सख्त जरूरत है-कुछ के लिए।

और कुछ के लिए-विलास है !

शहर की प्यास बुझाने के लिए

कितना भी पानी हो,

कम है।

है एक ही घड़ा।

मनुष्य जिस प्रकार बढ़ रहे हैं

पानी भी वैसे बढ़ेगा क्या ?

कल के चित्र रंगों के लिए

पानी की कमी है।

वर्षा के पेड़ से न जाने

बूंदें टपकेंगी या नहीं।

चढ़ाव के, परिवाहक वादों के

ढलान के न्याय-सूत्रों के बीच

तालमेल नहीं बैठता।

पानी की स्पर्धा

प्राणान्तक क्रीड़ा बन जाएगी।

बावड़ी का थोड़ा सा पानी

मृतजल समाधि बन जाता है।

वर्षा के लिए नहीं प्यास के लिए छतरी उठाओं

हरी-हरी छतरियाँ।

जंगलों की हरित छतरियों से

अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषाओं के विशिष्ट साहित्य को राष्ट्रीय साहित्य और विश्व साहित्य के रूप में पढ़ते हैं। भारत बहु भाषिक देश होने के नाते साहित्य की सारी विधाएँ समकालीन रूप में साहित्य प्रेमी पढ़ते हैं। अगर किसी भाषा के अंतर्गत कोई विशेषता है

तो उसके बारे में जानकारी हमें अनुवाद के द्वारा ही प्राप्त होती है। साहित्य की नई विधाओं का भी परिचय मिलता है। जैसे तेलुगु साहित्य की हाईकू कविता, नानीलु आदि।

उपरोक्त तेलुगु काव्य 'जलगीतम्' का हिंदी अनुवाद 'जलगीत' के बारे में सुप्रसिद्ध कवि केदारनाथ सिंह की बातें द्रष्टव्य हैं - "मैंने भी एन गोपी द्वारा रचित तथा प्रो.'मणि' (प्रो. मणिक्यम्बा) द्वारा हिंदी में अनुदित काव्य 'जलगीत' का रसास्वादन किया और तृप्त हुआ। 'पानी' वर्तमान मानव जीवन की मूलभूत समस्या का रूप लेता जा रहा है क्योंकि वह जीवन का ही दूसरा नाम है। मेरी जानकारी में यह पानी पर लिखी गई शायद सबसे लंबी कविता है अब तक की। इसमें पानी की तरह ही एक सह प्रवाह है और दुर्लभ पठनीयता। प्रो. मणि ने अपने हिंदी रूपांतर में उस सहज प्रवाह को आद्यंत बना रखा है। और इस प्रकार यह एक उच्च स्तरीयता प्राप्त कर चुका है। मैं इस महत्वपूर्ण अनुवाद के लिए अनुवादिका को हार्दिक साधुवाद देता हूँ और इस मूल रचयिता को कोटिशः बधाइयाँ।"

इस प्रकार एक सम्मानित विद्वान और कवि द्वारा अनुदित पाठ को प्रशंसा मिली है। एक सह प्रवाह का जिक्र किया केदारनाथ जी ने। उसे निम्नलिखित पंक्तियों में देख सकते हैं और जलदेवी का आक्रोश भी देख सकते हैं।

आपदाएँ।

सावधान।

संक्रामक मेरा फ्लोरोसिस

कैसे भी कम नहीं होगा।

नदी का पानी लाओ

जनता के होठों से लगाओं

मैं निराशावादी नहीं हूँ।

यहाँ-वहाँ

जन्म ले रहें हैं तेजेस्वी

जल की आत्मा के

आविष्कार के लिए

जल के आदर्श को व्याप्त करने।

उनके अन्दर की जल-शक्ति

सब में प्रज्वलित होना है।

सबके चेहरों पर

जल का जीव आलोक फैले।

संसार को ऐसे ही

महापुरुषों के पीछे चलना है।

नहीं तो

मरुभूमि ही तुम्हारा मार्ग है।

और एक बार कहती हूँ।

मेरा मूल्य जानो ! मेरी कीमत समझो।

मुझे प्रदूषित करते

फिर शुद्ध करते

फिर शुद्ध करते, मुझे

दुकान का सौदा मत बनाओ

पहले अपने हृदयों को

शुद्ध करो।

ढुलकने वाले रक्तदाणों को

हृदय की अंजुलियों में भर लो।

.....

फिर भी आप लोग ?

आपका जीवन बना

....

आपकी जिन्दगियों के लिए

पुष्कर बना मैं

आपके साँसों की रखवाली के लिए

अमृत पूर्ण हो गयी।

फिर आप क्या कर रहे हैं ?

अपने गहरे सम्बन्ध को

दुर्गन्ध इसमें भर रहे हैं।

मैं नदी बनकर

पैर टूटने तक दौड़ा तो

...

आप लोग क्या कर रहे हैं ?

मेरे सभी अंगों पर आधिपत्य कर

नगरों की दुराशा, अति आशा ने

जंगलों की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी।

जंगल ही नहीं है तो

दम घुट जाएगा।

थक कर धरती की परतों में गया तो

वहाँ भी विष का प्रयास है।

मेरा विनाश, क्या

तुम्हारे विकास का भूषण है?

हिम में दबा तो भी

तलवार खींचकर दबाव डाल रहे हैं।

मानव !

हिम की तरफ मत आओ !

हे! मानव मृग !

क्या...

....

उठों !

प्रतिक्षण

जलक्षण

प्रतिपल

जल-पल

प्रति निमिश

जलोन्मेष

प्रति घण्टा

जल का घण्टा

हर ऋतु

जल-ऋतु

यही मेरे जल का नगाड़ा है।

तुम्हारे भविष्य का राजमार्ग है।

सारे संसार में घोषणा करो

जल-अलर्ट!

बढ़ाओ अपना आगे हाथ

गूँजे दिशाओं में मेरा

यह जलगीत।

इस तरह के पारिस्थितिक विमर्श पर लिखी गई कविताएँ समाज में प्रेरणादयक सिद्ध हो रही हैं। इस प्रकार आधुनिक कविता के रूप में गद्य वचन कविता (गद्यकविता) के रूप में पापिनेनी शिवशंकर ने 'रजनीगंधा' नाम से लिखा है। इसका भी अनुवाद हो चुका है। ऐसे ही 'हमारी गाँव की मालछमी' नामक लंबी कविता श्रीमती कमला देशिकन द्वारा लिखी गई। उसमें पूरी तरह गाँव का वातावरण, प्रकृति, झील, नाले, खेत आदि का वर्णन मिलता है साथ में संस्कृति, त्योहार और परम्परायें आदि का भी चित्रण मिलता है। इसका अनुवाद डॉ. अन्नपूर्णा और डॉ. लक्ष्मीकांतम् ने किया। ये रचनाएँ प्रकाशनाधीन है इसके अलावा अनेक प्रसिद्ध रचनाएँ तेलुगु से अनुवाद हो चुकी है। प्रो. मणि ने स्त्रीवादी लेखिका श्रीमती ओल्गा का परिचय हिन्दी जगत को किया। उनकी रचनाओं का स्त्रीवादी और ओल्गा का साहित्य नाम से हिन्दी में अनुवाद किया और सभी पाठकों का रसान्वादन करा रहे है।

इस प्रकार अनुवाद के माध्यम से संस्कृति, समाज और परंपराओं का आदान-प्रदान हो रहा है। सामाजिक संस्कृति का निर्माण कर रहे हैं। वर्तमान भूमंडलीकृत परिवेश में विश्वग्राम की जो संकल्पना कर रहे हैं वह अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पायेगा। हम सभी "वसुधैवकुटुम्बकम्" की ओर अग्रसर हो रहे हैं और भावात्मक एकता से सभी भाषाओं के साहित्य को अनुवाद के माध्यम से एक माला में पिरोते जा रहे हैं।